कौशल विकास: प्रशिक्षण की संख्या से टिकाऊ रोजगार तक

समाचार संदर्भ: 24 अगस्त 2026 | मानव पूँजी • रोजगार • शिक्षा | GS-III

प्रशिक्षण पूरा होना उपयोगी शुरुआत है, लेकिन उसकी सफलता इससे भी तय होती है कि सीखा हुआ कौशल काम में आया या नहीं। रोजगार मिला, आय बढ़ी और काम टिक पाया, तभी कौशल नीति का लाभ व्यक्ति और अर्थव्यवस्था तक पहुँचता है।

खबरों में क्यों

24 अगस्त 2026 की एक रिपोर्ट में नीति आयोग के 'Reimagining Skilling for Viksit Bharat@2047' अध्ययन पर चर्चा हुई। अध्ययन ने प्रशिक्षण में भागीदारी के साथ रोजगार और आजीविका के परिणाम मापने पर जोर दिया। इसकी सिफारिशें सुधार की दिशा बताती हैं; उन्हें सभी राज्यों और संस्थानों में लागू हो चुकी व्यवस्था नहीं मानना चाहिए।

कौशल और रोजगार-योग्यता में क्या संबंध है?

कौशल किसी काम को समझकर करने की क्षमता है। रोजगार-योग्यता में तकनीकी ज्ञान के साथ समस्या-समाधान, संवाद, काम का अनुभव और बदलती जरूरतों के अनुसार सीखना शामिल है। प्रमाणपत्र इसका संकेत हो सकता है, पूरा प्रमाण नहीं। नौकरी मिलना उपलब्ध काम, स्थान, वेतन और संस्थागत स्थितियों पर भी निर्भर करता है।

मुख्य तथ्य

जीवन भर सीखने का दृष्टिकोण: अध्ययन स्कूल, उच्च शिक्षा, काम और काम से बाहर रहने की अवस्थाओं को जोड़ता है। एक बार प्रशिक्षण देने के बजाय जीवन के अलग चरणों में सीखने और आगे बढ़ने के रास्ते जरूरी हैं।

उद्योग से जुड़ाव: कार्यस्थल पर सीखना, शिक्षुता और नियोक्ता की भागीदारी पाठ्यक्रम को वास्तविक काम से जोड़ सकते हैं। लेकिन शिक्षुता में प्रवेश अपने आप स्थायी नौकरी की गारंटी नहीं है।

परिणाम आधारित वित्त: अध्ययन रोजगार में नियुक्ति, आय में सुधार और काम में बने रहने जैसे परिणामों से सहायता जोड़ने की दिशा सुझाता है। परिणाम का स्वतंत्र सत्यापन और कमजोर समूहों के लिए सुरक्षा जरूरी होगी।

स्रोत की सीमा: रिपोर्ट राष्ट्रीय आँकड़ों, क्षेत्रीय अनुभवों और अन्य अध्ययनों को जोड़ती है। अलग सर्वेक्षणों के आँकड़ों को एक ही समय और सभी लोगों का समान परिणाम नहीं मानना चाहिए।

प्रशिक्षण के बाद भी काम तक दूरी क्यों रह सकती है?

मांग से असंगति: पाठ्यक्रम में सिखाया गया काम स्थानीय उद्योग की जरूरत से अलग हो सकता है। नियोक्ता से नियमित संवाद और पाठ्यक्रम की समीक्षा इस दूरी को घटा सकती है।

पहुँच की बाधाएँ: फीस के अलावा यात्रा, समय, देखभाल की जिम्मेदारी और उपयुक्त पाठ्यक्रम की जानकारी भी निर्णय को प्रभावित करते हैं। केवल सीट बढ़ाने से ये बाधाएँ दूर नहीं होतीं।

गुणवत्ता का प्रश्न: कमजोर प्रशिक्षण और अस्पष्ट आकलन से प्रमाणपत्र का भरोसा घट सकता है। व्यावहारिक परीक्षा तथा काम में प्रदर्शन का प्रमाण जरूरी है।

विश्लेषण और आगे की राह

राज्यों को स्थानीय रोजगार और उद्यम की जरूरतों के अनुसार प्रशिक्षण की योजना बनानी चाहिए। पाठ्यक्रम, शिक्षुता, परामर्श और आगे की पढ़ाई के बीच रास्ते स्पष्ट हों। निगरानी में केवल प्रवेश या प्रमाणपत्र नहीं, काम की गुणवत्ता, आय और टिकाव भी देखें। परिणाम आधारित भुगतान में केवल आसानी से नौकरी पाने वाले अभ्यर्थी चुनने का प्रोत्साहन न बने; कठिन परिस्थितियों वाले लोगों की भागीदारी भी सुरक्षित रखनी होगी।

अवधारणा में अंतर

कौशल की कमी और रोजगार के अवसरों की कमी अलग समस्याएँ हैं। व्यक्ति को बेहतर प्रशिक्षण देना जरूरी है, लेकिन इससे अर्थव्यवस्था में पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण काम पैदा होने का प्रश्न समाप्त नहीं होता।

मेंस दृष्टि

शिक्षा, उद्योग, श्रम बाजार और सामाजिक बाधाओं को जोड़ें। प्रशिक्षण की सफलता का मूल्यांकन संख्या के साथ सीखने की गुणवत्ता और वास्तविक आजीविका में सुधार से करें।

UPSC CSE Mains शैली: मौलिक अभ्यास प्रश्न

भारत में कौशल विकास की सफलता को प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों की संख्या के बजाय टिकाऊ रोजगार के परिणामों से मापना क्यों आवश्यक है? उपयुक्त उपाय सुझाइए।

(उत्तर 150 शब्दों में दीजिए) | 10 अंक

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: प्रशिक्षण प्राप्त लोगों की संख्या कार्यक्रम की पहुँच बताती है, उसकी पूरी सफलता नहीं। प्रमाणपत्र, वास्तविक काम करने की क्षमता और टिकाऊ नौकरी अलग परिणाम हैं; कौशल का लाभ आजीविका में दिखना चाहिए।

मुख्य भाग में: नियुक्ति के साथ आय, काम की गुणवत्ता और रोजगार में बने रहने को मापें। स्थानीय मांग के अनुसार पाठ्यक्रम, नियोक्ता संवाद, कार्यस्थल पर सीखना तथा शिक्षुता जोड़ें। व्यावहारिक आकलन से गुणवत्ता जाँचें और परामर्श व आगे पढ़ने के रास्ते दें। यात्रा, फीस, समय और देखभाल की बाधाएँ घटाएँ। परिणाम-आधारित भुगतान का स्वतंत्र सत्यापन हो; केवल आसानी से नौकरी पाने वाले अभ्यर्थियों को चुनकर कमजोर समूह बाहर न हों।

निष्कर्ष में: जीवन भर सीखने की क्षमता और समावेशी भागीदारी को बढ़ाएँ। प्रशिक्षण सुधार जरूरी है, लेकिन कौशल की कमी और पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण रोजगार के अवसर न होना अलग समस्याएँ हैं; नीति दोनों पर काम करे।

स्रोत

- नीति आयोग: Reimagining Skilling for Viksit Bharat@2047, 2026
- BusinessLine, 24 अगस्त 2026: प्रशिक्षण और रोजगार के परिणामों की चर्चा

याद रखें: कौशल नीति का परिणाम प्रमाणपत्र से आगे, बेहतर काम और आगे सीखने की क्षमता में दिखना चाहिए।